मीनाक्षी भारद्वाज

चित्राँकनः क्रिस्टोफर कोर

मैं हूँ आन

कथा की 300एम थिंकबुक

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

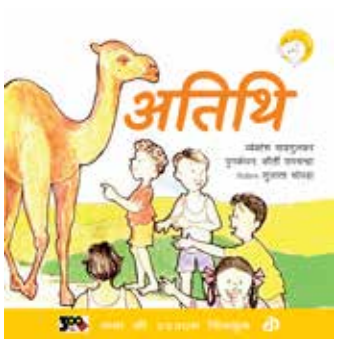

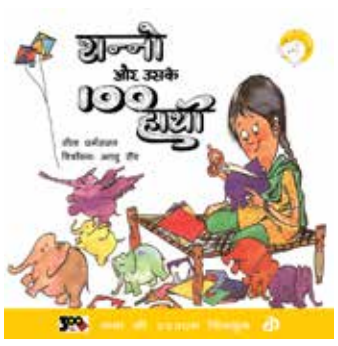

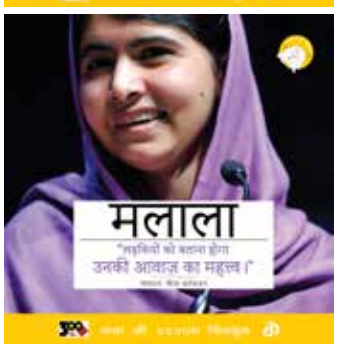

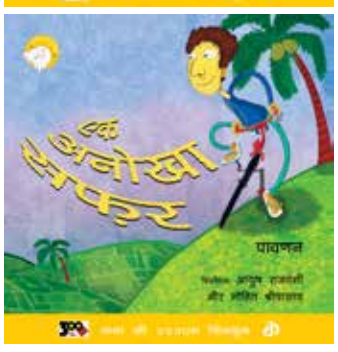

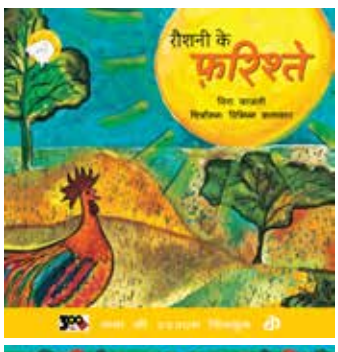

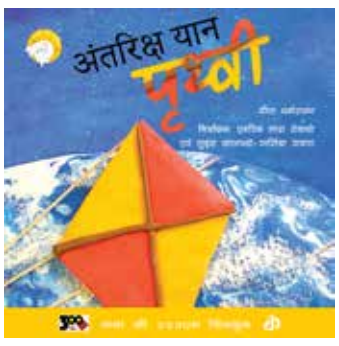

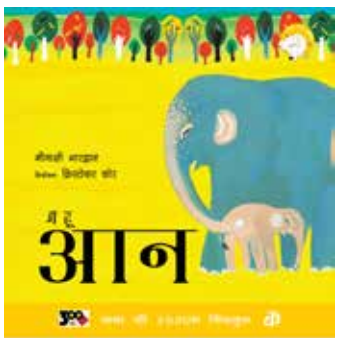

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

www.katha.org

₹ xxx

इसकी तीन शृंखला में

अक्टूबर का महीना है।

पश्चिमी घाटियों के घने जंगलों में एक नन्हे हाथी
का जन्म हुआ है।

उसका नाम है – आन।
यह उसकी कहानी है।

मैं आपको अपने परिवार के बारे में बताता हूँ।
मेरे झुंड में बीस मादा-हाथी और शिशु हैं।

दादी रानी एक अनुभवी मादा-हाथी हैं। वह हमें राह दिखातीं हैं और हमारी रक्षा करतीं हैं।

वह हमारे झुंड की माँ, मौसी और दादी हैं। दादी रानी नन्हे शिशुओं के साथ बहुत नर्म हैं, लेकिन अगर बाघ आ जाए तो ...

अरे बाप रे!

खतरनाक बन जातीं हैं।

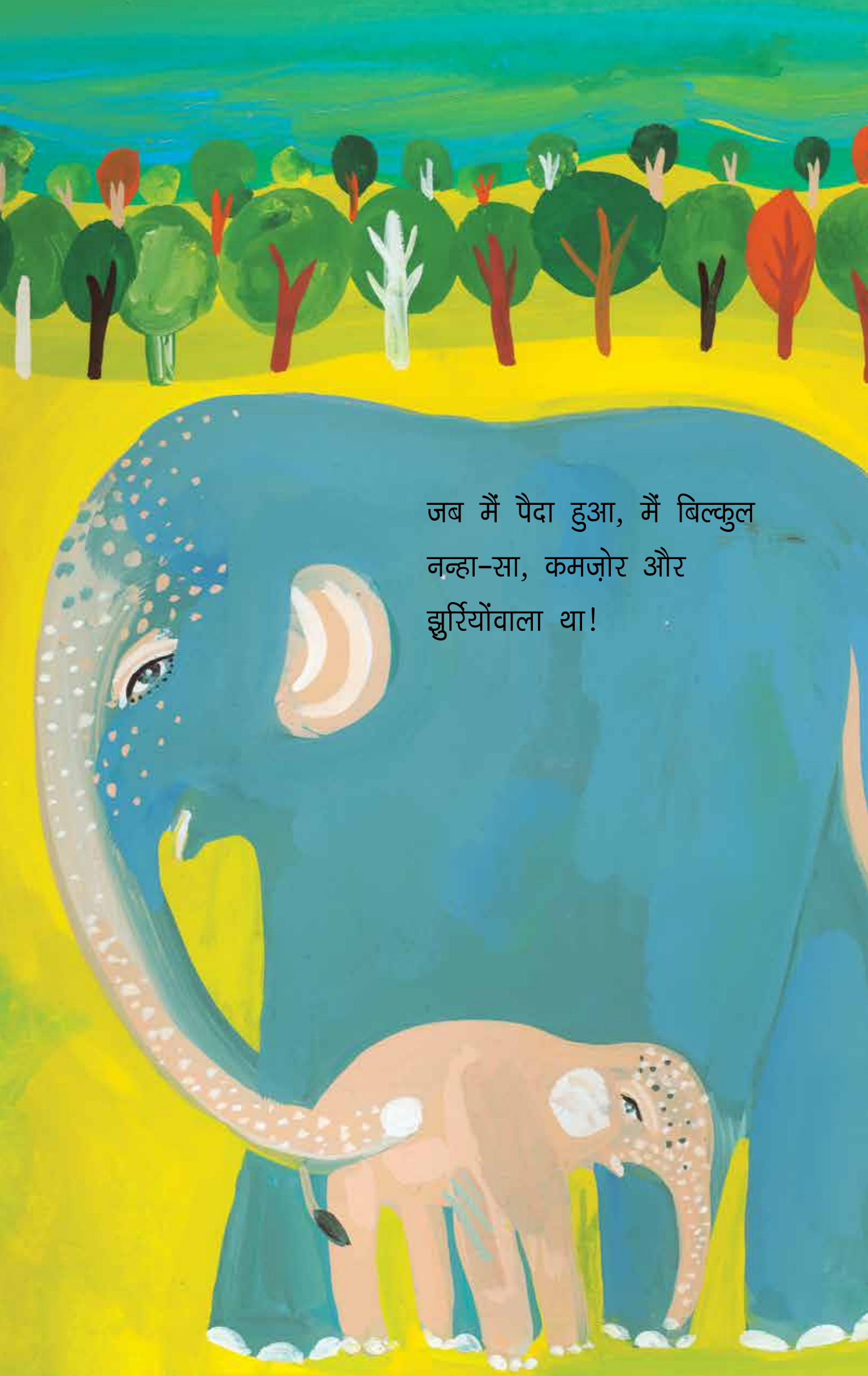

जब मैं पैदा हुआ, मैं बिल्कुल
नन्हा-सा, कमज़ोर और
झुर्रियोंवाला था!

दूसरी मादा-हाथियों ने मेरी माँ की मदद की, लेकिन फिर भी मुझे जन्म देने में वह काफी थक गईं। थकान से उनकी गर्दन लटक गई और पैर कमज़ोर हो गये। फिर भी उन्होंने मुझे अपने पेट के नीचे सुरक्षित रखा।

मेरी बहन मेघा ने सूँड से
सहलाकर मेरा स्वागत किया।

जन्म के समय
मैं तीन फुट
ऊँचा था और
मेरा वज़न था
75 किलो।

लेकिन फिर भी जब हमारा झुंड चलता, मैं हर कदम पर लड़खड़ाता। दो दिन लगे मेरी टाँगों में ताकत आने में।

और पूरे तीन दिन लगे मुझे माँ के स्तन ढूँढनें में!
मैंने अपने नर्म मुँह से दूध पिया।

शुरुआत में तो मुझे पता ही नहीं था कि मैं अपनी इस सूँड के साथ क्या करूँ, लेकिन जल्द ही मैं सीख गया और दूध पीते समय इसके साथ खेलने लगा। और जब मैं अकेला होता तो बैठे-बैठे इसे ही चूसता।

वैसे मैं ज़्यादा वक्त अकेला नहीं होता था। मैं तो कभी मौसियों का, कभी दादी रानी का, जो हमारे झुंड की नेता थीं, और कभी अपनी बहनों का दूध पीता था।

एक वर्ष का होने से पहले ही मैंने शाक-पत्तियाँ खाना शुरु कर दिया था। लेकिन दूध मैं चार वर्ष का होने तक पीता रहा।

मैं तो पूरे झुंड का, खासकर अपने भाई और बहन का दुलारा था।

उन्हें देखकर मैंने खाना खाना, अपनी सूँड का इस्तेमाल करना (कई बार तो इसमें गाँठ भी लग जाती!) और अपनी पीठ पर लोटना सीखा। मैं तो माँ के मुँह से भी खाना चुरा लेता। फिर मैंने जाना कि बड़ों के मुँह को सूँड से छूना अभिनंदन का एक रूप है।

अपने जीवन के पहले वर्ष में मैं अपनी माँ के साथ ही रहता, उससे चिपककर। सब कुछ उसी से सीखता। वह मुझे कीचड़ से नहलाती और मुझे अपनी नज़रों से दूर न होने देती।

वह दुनिया की सबसे अच्छी माँ थी।

पर जब मैं बदमाशी करता तो वह मुझे अपनी सूँड से मारती भी थी!

जब मैं पाँच वर्ष का हुआ, मैं काफी हद तक अपनी देखभाल खुद करने लगा था।

मैं आस-पास घूमने आए दूसरे हाथी-परिवारों से भी मिलता। और हम सब भाई कुश्ती लड़ते।

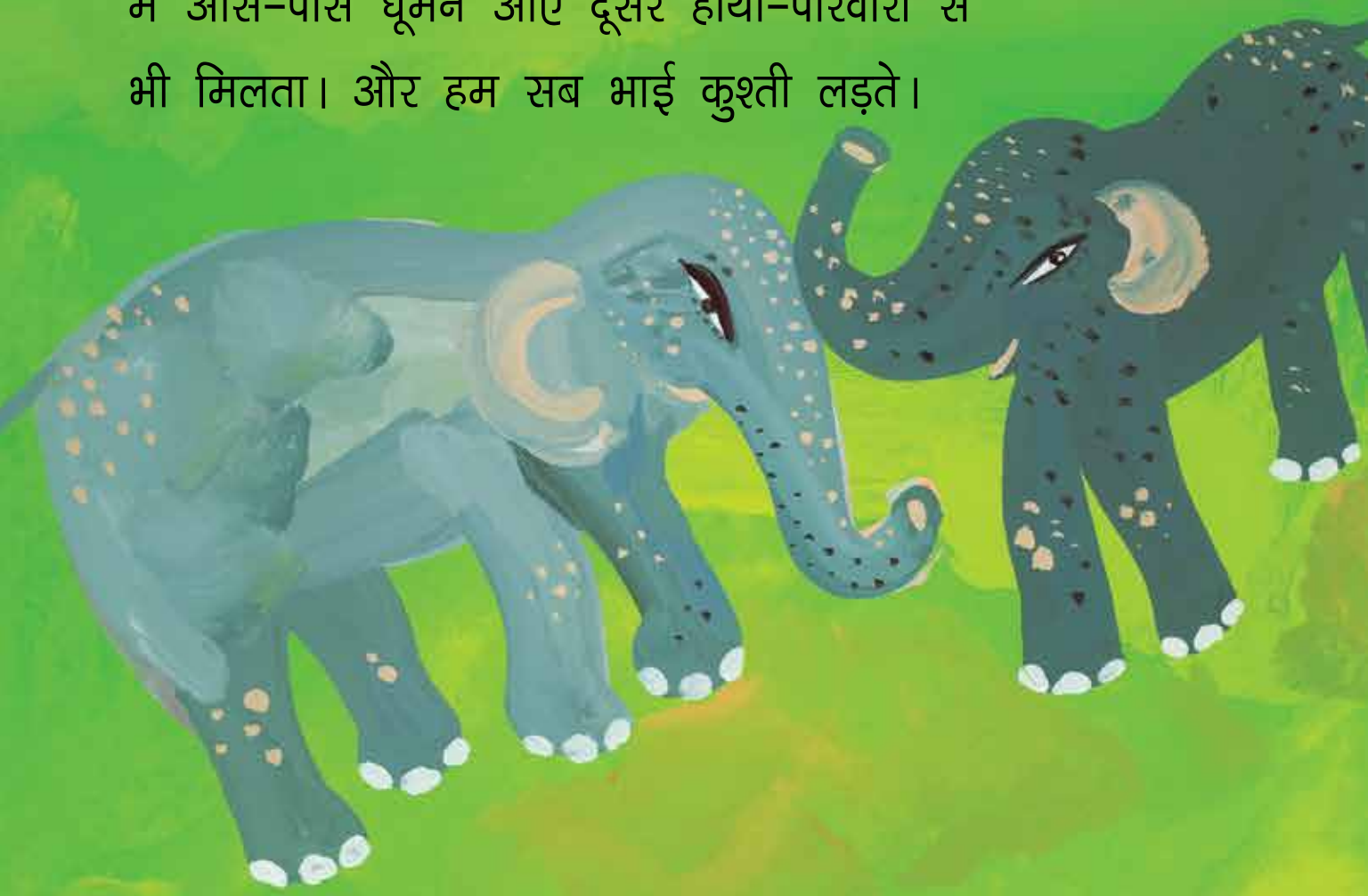

मुझे मेघा और भाई को तंग करने में, कीचड़ में लोटने में और दोपहर को सोने में खूब मज़ा आता।

एक बार तो मेरा झुंड मुझे छोड़कर आगे बढ़ ही जाता अगर मेघा मुझे गुदगुदा कर नहीं उठाती!

मेघा कहती मैं बहुत चंचल हूँ, सभी
नन्हे हाथी ऐसे नहीं होते।

जब बड़े हाथी सोये होते, मुझे उन पर चढ़ने में बड़ा मज़ा आता और उन्हें बिल्कुल बुरा नहीं लगता था।

सूखे गिरते पत्तों का पीछा करने और दौड़ लगाने में मुझे बहुत आनंद आता।

बहुत भाग्यशाली था मैं, मेघा मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी। उसे मेरी माँ बनने का बहुत शौक था। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े हुए, वो हमारी तरह लड़ती-खेलती नहीं थी। हाँ! खेल अगर ज़्यादा गंभीर हो जाता, तो वह हमारे बीच घुस जाती।

वह अब दस वर्ष की हो गई थी और एक माँ की तरह सभी शिशुओं का ध्यान रखती थी।

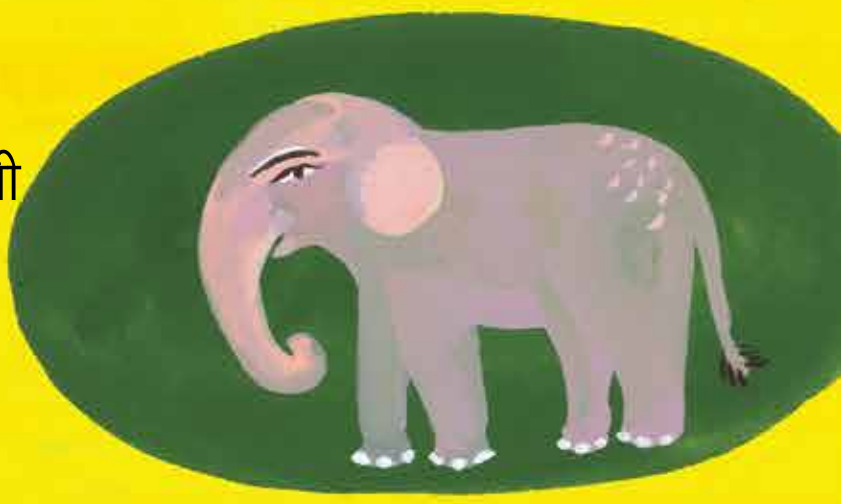

जब तक मैं बारह वर्ष का हुआ, झुंड मेरी मस्ती से परेशान होने लगा था।

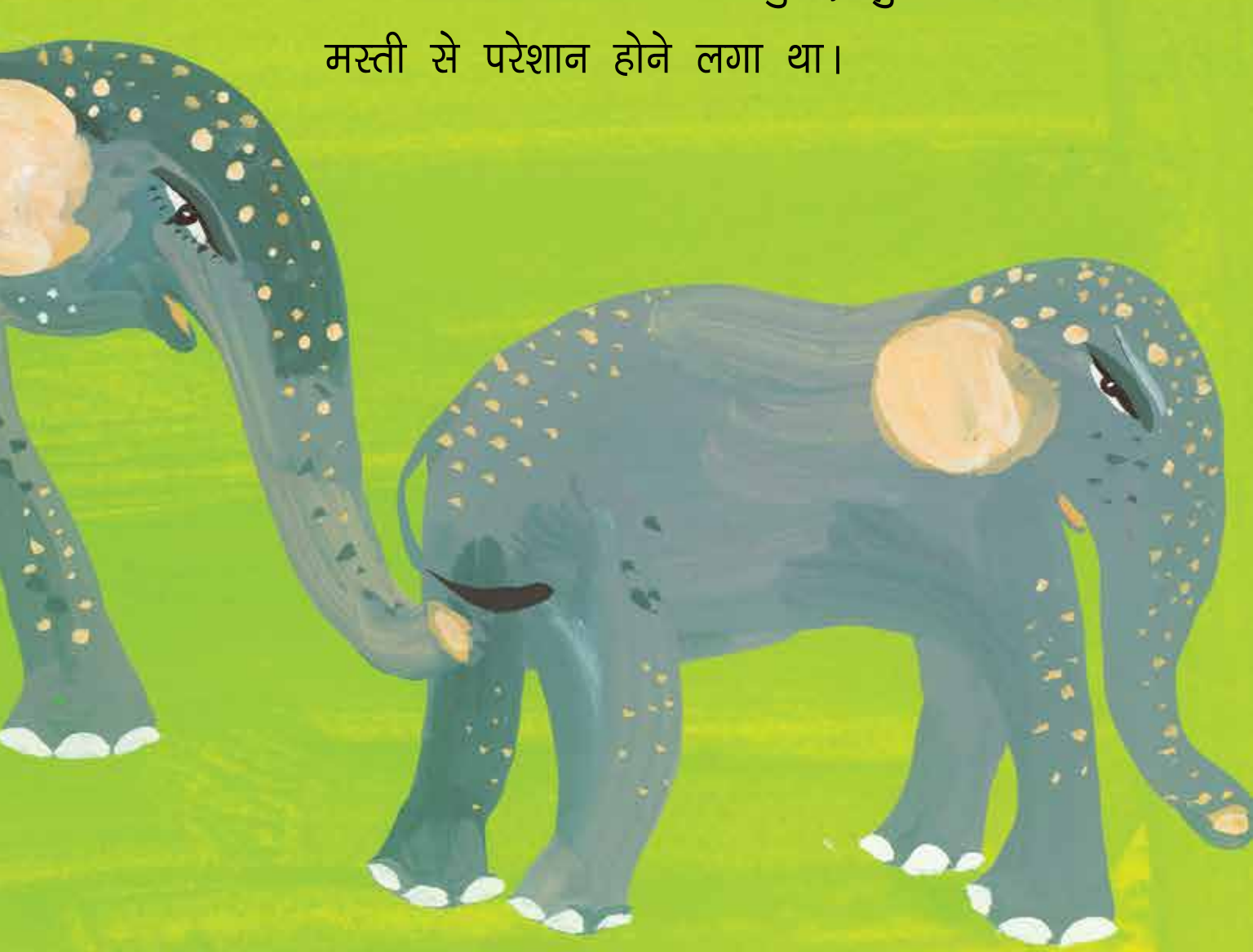

आखिरकार एक दिन दादी रानी ने मुझे अपने झुंड से अलग कर दिया। मैं तो वापस आना चाहता था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं करने दिया।

मैं कुछ दिन उनके आस-पास मंडराता रहा। लेकिन धीरे-धीरे मैं बड़े नर-हाथियों के साथ जाने लगा। मैं समझता हूँ बच्चों की देखभाल और सुरक्षा के लिए मादाओं को झुंड में रहने की आवश्यकता होती है।

अब मुझे अकेला रहना पसंद है।

कभी-कभी मैं दूसरे नर या मादा हाथियों के झुंडों से मिल जाता हूँ, पर दादी रानी के झुंड में नहीं जाता।

जब मैं छोटा था, मुझे दादी रानी के झुंड से बहुत प्यार मिला और हम हाथी कभी नहीं भूलते!

हाथी मेरे साथी

हाथी का वज़न आपकी स्कूल बस के बराबर हो सकता है – 5000 किलो तक।

हाथी के दाँत का वज़न लगभग 3 किलो तक हो सकता है।

हाथी खड़े–खड़े ही सोते हैं।

हाथी अपनी सूँड से साँस लेते हैं और सूँघते हैं। वे अपनी सूँड से हाथों और बाहों का भी काम लेते हैं।

हाथियों को कीचड़ में नहाने में बड़ा मज़ा आता है और वे अच्छे तैराक भी होते हैं।

हाथी कानों से हवा कर अपने–आप को ठंडा रखते हैं।

केला, चावल और गन्ने उनके प्रिय भोजन हैं।

हाथियों के झुंड की नेता हमेशा एक मादा–हाथी ही होती है।

हाथी बहुत संवेदनशील प्राणी होते हैं। यदि एक नन्हा हाथी रोए या उसे कुछ तकलीफ हो, तो दल के सभी हाथी उसे लाड़ करने पहुँच जाते हैं।

हाथी रोते हैं, और हँसते भी हैं।

हाथियों की याददाश्त आश्चर्यजनक होती है।

एक ही ऐसे स्तनपायी जानवर हैं जो कूद नहीं सकते – और वे हैं हाथी।

क्यों, हैं न मज़े की बात!

ehuk{kh Hkkj}kt को बच्चों के लिए लिखना बेहद अच्छा लगता है। रात की आवाज़ें उन्हें बड़ी रोमाँचक लगती हैं और उनकी खिड़की के बाहर जब अलसाई सुबह आँख खोलती है तो वह सपनों की दुनिया में खो जातीं हैं। उनका कहना है कि आधी रात से लेकर सुबह चार बजे के बीच में ही वह लिख पाती हैं।

fÿLVkQj dkj एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बच्चों की किताबों के चित्रकार हैं। उनका जन्म लन्दन में हुआ और वह रोयल कॉलेज ऑफ आर्ट्स से पढ़े। उनका काम करने का ढंग पारम्परिक है – हाथों से बने इटालियन या भारतीय काग़ज पर उक्त रंगो से चित्रकारी। पूरी दुनिया में घूमना उनके काम को प्रेरणा देती है और वह कहते हैं कि रंगों को उन्होंने भारत में नये रूप में पाया।

uhuk ok?k का बचपन इलाहबाद जैसे साहित्यिक शहर में गुज़रा, जहाँ उनके घर के पास एक तरफ महादेवी वर्मा रहती थीं, और दूसरी तरफ मुंशी प्रेमचंद के बेटे अमृत राय। इसी आबो–हवा ने उनमें हिन्दी के लिए प्रेम भाव जगाया। कथा के लिए यह उनका पहला काम है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2010, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © मीनाक्षी भारद्वाज
चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।